Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)

E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

कोडमदेसर और अन्य ग्रामीण देवालयों का अध्ययन: लोक-धार्मिक पर्यटन की संभावनाएँ

नरेंद्र सिंह राणावत[1], राजेश स्वामी[2]

[1]मार्गदर्शक व सहायक आचार्य, इतिहास, भूपाल नोबेल विश्वविद्यालय, उदयपुर
[2]पीएचडी शोधार्थी, भूपाल नोबेल विश्व विद्यालय उदयपुर व सहायक आचार्य इतिहास राजकीय महाविद्यालय सराड़ा, सलूम्बर

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र राजस्थान के बीकानेर अंचल में स्थित कोडमदेसर भैरव मंदिर को केंद्र में रखते हुए तोलियासर भेरू जी मंदिर (श्रीडूंगरगढ़ के समीप), बजरंग धोरा हनुमान जी मंदिर (बीकानेर), गुसाइसर स्थित गुसाईं जी का धाम (बीकानेर–जयपुर मार्ग पर 33 किमी दूरी पर) तथा सुजानदेसर स्थित माँ काली एवं बाबा रामदेव मंदिर जैसे प्रमुख ग्रामीण देवालयों के धार्मिक, सांस्कृतिक और पर्यटनात्मक आयामों का समग्र अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन इन लोकदेवताओं एवं ग्राम्य देवालयों से जुड़ी जन-आस्थाओं, अनुष्ठानों, लोकमान्यताओं, मेलों एवं परंपराओं का विश्लेषण करते हुए इनके सामाजिक प्रभाव और सांस्कृतिक निरंतरता में योगदान को रेखांकित करता है। शोध यह स्पष्ट करता है कि ये देवालय केवल पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ग्रामीण जीवन की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक चेतना और सामुदायिक एकता के केंद्र बिंदु भी हैं। गुसाईं जी का धाम तथा सुजानदेसर के माँ काली और बाबा रामदेव मंदिर जैसे स्थल लोकदेवता परंपरा, शौर्य, शक्ति, भक्ति और जनकल्याण की लोक अवधारणाओं के सशक्त प्रतीक हैं। इन देवालयों से जुड़े वार्षिक मेले, यात्राएँ और अनुष्ठान लोककला, लोकसंगीत, लोकनाट्य और पारंपरिक शिल्प को भी जीवंत बनाए रखते हैं। अध्ययन में यह भी प्रतिपादित किया गया है कि इन ग्रामीण धार्मिक स्थलों में लोक-धार्मिक पर्यटन की व्यापक संभावनाएँ निहित हैं। यदि इन मंदिरों को सुव्यवस्थित पर्यटन अवसंरचना, प्रचार-प्रसार और सांस्कृतिक मार्गों से जोड़ा जाए, तो यह क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था, रोजगार सृजन और ग्रामीण विकास को नई गति दे सकते हैं। साथ ही, यह सतत पर्यटन विकास के आदर्श मॉडल के रूप में उभर सकता है, जो सांस्कृतिक संरक्षण और आर्थिक सशक्तिकरण—दोनों को संतुलित रूप से साधता है। इस प्रकार, यह अध्ययन बीकानेर अंचल के ग्रामीण देवालयों को लोकधार्मिक आस्था, सांस्कृतिक विरासत और पर्यटन विकास के त्रिकोणीय संदर्भ में स्थापित करता है।

मुख्य शब्द: लोक-देवालय, कोडमदेसर, ग्रामीण धार्मिक स्थल, लोक-आस्था, सांस्कृतिक विरासत, पर्यटन विकास, सामुदायिक सहभागिता, ग्रामीण संस्कृति संरक्षण

1.1 भूमिका

भारत की धार्मिक परंपरा बहुस्तरीय, बहुसांस्कृतिक तथा लोक और शास्त्र—दोनों के समन्वय से विकसित हुई परंपरा है। जहाँ एक ओर वेद, उपनिषद, पुराण और आगम-परंपराएँ शास्त्रीय धार्मिक ढाँचे को निर्मित करती हैं, वहीं दूसरी ओर लोकदेवता, ग्राम्य देवियाँ, सिद्ध, पीर, योगी और संत परंपरा जनसामान्य की धार्मिक चेतना को जीवंत बनाए

रखती है (दुबे, 1999; एलमोर, 2006)। लोकदेवता परंपरा मूलतः ग्रामीण समाज की धार्मिक आवश्यकताओं, सामाजिक संरचना, प्राकृतिक आपदाओं, कृषि-आधारित जीवनशैली तथा सामूहिक सुरक्षा-बोध से उत्पन्न हुई है (शर्मा, 2012)। राजस्थान जैसे मरुस्थलीय प्रदेश में, जहाँ जीवन जल, पशुधन और सीमित प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित रहा है, वहाँ लोकदेवताओं की भूमिका और भी अधिक सुदृढ़ रूप में विकसित हुई है (सिंह, 2007)। राजस्थान की ग्राम्य धार्मिक संस्कृति में लोकदेवताओं को केवल पूजा के विषय के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि वे सामाजिक न्याय, संकट-निवारण, रोग-शमन, प्राकृतिक विपत्तियों से रक्षा तथा समुदाय की सामूहिक पहचान के संरक्षक माने जाते हैं (कोठारी, 2004)। तेजाजी, रामदेवजी, गोगाजी, पाबूजी, भैरव, काली, जसनाथ और करणी माता जैसे लोकदेवताओं की उपासना जाति, वर्ग और आर्थिक भिन्नताओं से परे एक समावेशी धार्मिक-सांस्कृतिक ढाँचे का निर्माण करती है (गोल्ड एवं गोल्ड, 1984)। इस प्रकार राजस्थान की लोकधार्मिक संस्कृति में मंदिर केवल धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि सामाजिक संवाद, लोककला, परंपरा-संरक्षण और सामुदायिक स्मृति के केंद्र के रूप में भी विकसित हुए हैं (भरुचा, 2015)।

बीकानेर अंचल राजस्थान के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित एक विशिष्ट भौगोलिक और ऐतिहासिक क्षेत्र है, जो थार मरुस्थल का अभिन्न अंग है। यह क्षेत्र प्राचीन व्यापारिक मार्गों, ऊँट-कारवाँ संस्कृति, चरवाहा समाज और सामरिक गतिविधियों से लंबे समय से जुड़ा रहा है (टॉड, 1829/2008; शर्मा, 1990)। बीकानेर राज्य की स्थापना 1488 ई. में राव बीका द्वारा की गई थी, जिसके पश्चात यह क्षेत्र सीमावर्ती रक्षा व्यवस्था, राजपूती सत्ता और धार्मिक-सांस्कृतिक गतिविधियों का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया (चंद्रमौली, 2011)। मरुस्थलीय जीवन की कठिन परिस्थितियों के कारण यहाँ के समाज में लोकदेवताओं, सिद्ध पुरुषों और देवी-शक्तियों के प्रति गहन आस्था विकसित हुई, जिसने धार्मिक आचरण को लोकपरंपरा से गहराई से जोड़ दिया (सिंह, 2003)। भौगोलिक दृष्टि से बीकानेर अंचल शुष्क जलवायु, अल्प वर्षा, रेतीली भूमि और सीमित कृषि संसाधनों वाला क्षेत्र है, जहाँ जलस्रोतों, वर्षा और पशुधन की सुरक्षा को लेकर लोकदेवताओं की उपासना विशेष महत्त्व रखती है (राजस्थान सरकार, 2022)। यही कारण है कि कोलायत, कालू, देशनोक, पूनरासर, सुजानदेसर, गुसाइसर और श्रीडूंगरगढ़ जैसे क्षेत्रों में विकसित धार्मिक स्थल केवल आस्था के केंद्र नहीं, बल्कि ग्रामीण समाज के सामाजिक अस्तित्व और सांस्कृतिक निरंतरता के आधार स्तंभ भी बन गए हैं (मेहता, 2016)। राजस्थान में लोक-धार्मिक पर्यटन की संभावनाएँ विशेष रूप से इसलिए अधिक सशक्त हैं क्योंकि यहाँ के अधिकांश धार्मिक स्थल शास्त्रीय मंदिर परंपरा से अलग लोकविश्वास, लोककथाओं, मेलों और अनौपचारिक तीर्थ यात्राओं से जुड़े हुए हैं (माथुर, 2014)। कोडमदेसर भैरव, जसनाथ जी धाम, रामदेवजी, करणी माता, भद्रकाली और तेजाजी जैसे स्थल प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं तथा ग्रामीण पर्यटन के एक सशक्त आधार का निर्माण करते हैं (आरटीडीसी, 2021)।

1.2 कोडमदेसर भैरव की लोककथा एवं उत्पत्ति-कथा

राजस्थान की लोकआस्था और क्षेत्रीय धार्मिक परम्पराओं में बाबा भैरवनाथ से जुड़ी कथाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। बीकानेर क्षेत्र में प्रचलित एक लोककथा के अनुसार एक भक्त राव चाहायड़ सिंह गहलोत, जो सैनिक क्षत्रिय माली समुदाय से सम्बद्ध थे, बाबा भैरवनाथ के परम उपासक थे। उनकी प्रगाढ़ भक्ति से प्रेरित होकर उन्होंने बाबा भैरवनाथ की मूर्ति को अपने गृह नगर मण्डोर (जोधपुर) से किसी अन्य स्थान पर स्थापित करने की इच्छा व्यक्त की। किंवदंती के अनुसार बाबा भैरवनाथ उनकी भक्ति से अत्यंत प्रसन्न हुए, परंतु उन्होंने एक महत्वपूर्ण चेतावनी भी दी कि यदि यात्रा के दौरान मूर्ति को किसी स्थान पर धरती पर रख दिया गया तो वह पुनः उठाई नहीं जा सकेगी और वही स्थान उनका स्थायी निवास बन जाएगा (गुप्ता,)।

भक्त राव चाहायड़ सिंह ने बाबा की आज्ञा को स्वीकार करते हुए मण्डोर से मूर्ति को लेकर यात्रा आरम्भ की। किंतु मार्ग अत्यंत लंबा और श्रमसाध्य था। यात्रा के दौरान एक समय ऐसा आया जब उन्हें अत्यधिक थकावट का अनुभव हुआ। विश्राम की आवश्यकता महसूस होने पर उन्होंने कुछ क्षणों के लिए मूर्ति को धरातल पर रखने का निर्णय लिया। जैसे ही मूर्ति भूमि पर रखी गई, उन्हें बाबा की दी हुई चेतावनी स्मरण आई, किंतु तब तक बहुत देर हो चुकी थी। लोकविश्वास के अनुसार उसी क्षण बाबा भैरवनाथ ने उस स्थान को अपना स्थायी निवास बना लिया और मूर्ति को पुनः उठाना असंभव हो गया। इस प्रकार वह स्थल बाबा भैरवनाथ की स्थायी उपस्थिति और लोकश्रद्धा का केंद्र बन गया। समय बीतने के पश्चात जब राव बिकाजी जांगलधर बादशाह—जिनके नाम से बीकानेर राज्य की स्थापना मानी जाती है—उस क्षेत्र में पहुंचे, तो उन्होंने उस पवित्र स्थल के महत्व को पहचानते हुए वहाँ एक मंदिर के निर्माण का निर्णय लिया। यह मंदिर अपनी विशिष्ट स्थापत्य परम्परा के कारण भी अत्यंत उल्लेखनीय है। विशेष रूप से ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि भैरवजी का यह मंदिर उन विरल मंदिरों में से एक है जहाँ मूर्ति के ऊपर छत का निर्माण नहीं किया गया है। इस प्रकार की स्थापत्य परम्परा भारत में अत्यंत दुर्लभ है। इसी प्रकार की परम्परा महाराष्ट्र के प्रसिद्ध शनि शिंगणापुर मंदिर में भी देखने को मिलती है, जहाँ भगवान शनिदेव की मूर्ति भी खुले आकाश के नीचे प्रतिष्ठित है।

धार्मिक मान्यता के अनुसार बाबा भैरवनाथ को भगवान शिव का उग्र और रक्षक स्वरूप माना जाता है। पौराणिक परम्परा में यह भी उल्लेख मिलता है कि भैरवनाथ का उद्भव भगवान शिव की भौहों के मध्य से हुआ था, इसलिए उन्हें शिव के "तीसरे नेत्र" की शक्ति का प्रतीक भी माना जाता है। इसी कारण भैरवनाथ को दुष्ट शक्तियों के संहारक, क्षेत्रपाल तथा भक्तों के रक्षक देवता के रूप में व्यापक श्रद्धा प्राप्त है। बीकानेर क्षेत्र में स्थित यह मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल ही नहीं, बल्कि स्थानीय लोकविश्वास, ऐतिहासिक परम्परा और सांस्कृतिक पहचान का भी महत्वपूर्ण प्रतीक बन गया है।

1.3 स्थान, दूरी एवं पहुँच के साधन:

कोडमदेसर (Kodamdesar) राजस्थान के बीकानेर जिले की कोलायत तहसील में स्थित एक महत्वपूर्ण धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थल है। यह स्थान बीकानेर शहर से लगभग 24 से 41 किलोमीटर की दूरी पर स्थित माना जाता है। विभिन्न स्रोतों में दूरी में थोड़ा अंतर मिलता है, किंतु सामान्यतः इसे बीकानेर से लगभग 25–40 किलोमीटर के मध्य माना जाता है। कोडमदेसर विशेष रूप से उस प्राचीन भैरव मंदिर के कारण प्रसिद्ध है, जिसका निर्माण बीकानेर राज्य के संस्थापक राव बीकाजी द्वारा कराया गया था। इस कारण यह स्थल क्षेत्रीय इतिहास, लोकआस्था और राजपूतकालीन धार्मिक परम्पराओं के अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है (गुप्ता, *बीकानेर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन*)।

भौगोलिक दृष्टि से यह स्थल कोडमदेसर गाँव में स्थित है, जो बीकानेर जिले की कोलायत तहसील के अंतर्गत आता है। यहाँ तक पहुँचने के लिए सड़क मार्ग सबसे उपयुक्त साधन है। बीकानेर शहर से निजी वाहन, टैक्सी, ऑटो तथा राज्य परिवहन की बसों के माध्यम से आसानी से पहुँचा जा सकता है। सामान्य परिस्थितियों में बीकानेर से कोडमदेसर तक की यात्रा में लगभग 40 मिनट से 1 घंटे का समय लगता है। यह स्थल धार्मिक पर्यटन के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि यहाँ स्थित भैरव मंदिर स्थानीय श्रद्धालुओं के साथ-साथ दूर-दराज़ से आने वाले भक्तों के लिए भी आस्था का प्रमुख केंद्र है। विशेष अवसरों और मेलों के समय यहाँ बड़ी संख्या में श्रद्धालु एकत्रित होते हैं, जिससे यह स्थान क्षेत्रीय सांस्कृतिक गतिविधियों का भी महत्वपूर्ण केंद्र बन जाता है।

कोडमदेसर भैरव मंदिर में वार्षिक मेला लोकधार्मिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण उत्सव माना जाता है। यह मेला विशेष रूप से चैत्र एवं आश्विन नवरात्रि के समय आयोजित होता है, जिसमें बीकानेर, चूरू, नागौर, जैसलमेर तथा

अन्य समीपवर्ती जिलों से हजारों श्रद्धालु भाग लेते हैं (आरटीडीसी, 2021)। मेला केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक उत्सव का स्वरूप ग्रहण कर लेता है (माथुर, 2014)। यहाँ की सबसे विशिष्ट परंपरा बलि-प्रथा से जुड़ी हुई है। श्रद्धालु मानते हैं कि बलि देने से भैरव प्रसन्न होते हैं और संकटों से मुक्ति मिलती है। यद्यपि आधुनिक समय में पशु-बलि को लेकर नैतिक और कानूनी विमर्श भी उभरा है, तथापि लोकविश्वासों में इसकी गहरी जड़ें आज भी विद्यमान हैं (कोठारी, 2004; भरुचा, 2015)। इसके अतिरिक्त झाड़-फूंक, भूत-प्रेत बाधा निवारण, मनौती, मन्नत, नारियल चढ़ाना, ध्वजा चढ़ाना, और अखंड दीप प्रज्वलन जैसी परंपराएँ यहाँ प्रचलित हैं। श्रद्धालु भैरव को त्वरित फलदाता और न्यायकारी देवता मानते हैं, इसलिए पारिवारिक विवाद, रोग, मुकदमे और पशु-हानि जैसी समस्याओं में भी यहाँ विशेष आस्था देखी जाती है (सिंह, 2018)। कोडमदेसर भैरव की उपासना में बीकानेर अंचल की बहुजातीय सामाजिक संरचना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। यहाँ राजपूत, जाट, नायक, मेघवाल, नट, ब्राह्मण, चारण, विश्नोई और दलित समुदाय समान श्रद्धा से पूजा में भाग लेते हैं (मेहता, 2016)। यह मंदिर लोकधार्मिक समरसता का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है, जहाँ जातीय भेदभाव धार्मिक आस्था के समक्ष गौण हो जाता है (गोल्ड एवं गोल्ड, 1984)। पशुपालक और चरवाहा समुदाय भैरव को अपने पशुधन का रक्षक मानते हैं, जबकि कृषक समुदाय वर्षा और फसल सुरक्षा के लिए उनकी आराधना करता है (शर्मा, 2012)। युवा वर्ग भैरव को शक्ति, साहस और विजय का प्रतीक मानता है, जबकि वृद्धजन उन्हें न्याय और कर्मफल से जोड़ते हैं (सिंह, 2007)। इस प्रकार भैरव-पूजन बहुआयामी सामाजिक अर्थों से जुड़ा हुआ है। मंदिर के प्रबंधन में भी स्थानीय समाज की सहभागिता स्पष्ट दिखाई देती है। पुजारी वर्ग के साथ-साथ ग्राम पंचायत, स्वयंसेवी समूह और मेला समितियाँ आयोजन की व्यवस्थाओं में सक्रिय भूमिका निभाती हैं, जिससे यह धार्मिक संस्था सामुदायिक संस्था का स्वरूप धारण कर लेती है (ब्रिडेनहैन एवं विकेन्स, 2004)।

1.4 कोडमदेसर भैरव मंदिर का ऐतिहासिक विकास: राव बीकाजी काल से आधुनिक काल तक

कोडमदेसर भैरव मंदिर का इतिहास बीकानेर राज्य के संस्थापक राव बीकाजी से गहराई से जुड़ा हुआ है। बीकानेर रियासत की स्थापना से पूर्व यह क्षेत्र जाँगल प्रदेश के नाम से जाना जाता था। ऐतिहासिक स्रोतों के अनुसार, जब राव बीकाजी 15वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में जोधपुर से नए राज्य की स्थापना हेतु जाँगल प्रदेश की ओर अग्रसर हुए, तब उन्होंने सुरक्षा एवं प्रशासनिक दृष्टि से देशनोक, चांदासर और कोडमदेसर में छोटे-छोटे दुर्गों एवं चौकियों का निर्माण करवाया था। आज भी इन स्थानों पर उन संरचनाओं के अवशेष स्थानीय इतिहास की साक्षी के रूप में विद्यमान हैं। कोडमदेसर भैरव मंदिर की स्थापना से जुड़ी सर्वाधिक प्रचलित लोककथा मंडोर (जोधपुर) से भैरवनाथ की मूर्ति लाने की घटना से संबंधित है। किंवदंती के अनुसार, मंडोर निवासी देराम जी माली भैरवनाथ की मूर्ति को टोकरी में रखकर अपने गांव ले जा रहे थे। मार्ग में कोडमदेसर स्थान पर पहुंचने पर वह टोकरी अचानक इतनी भारी हो गई कि उनसे उठाई नहीं जा सकी। भक्त ने इसे भैरवनाथ की इच्छा मानकर वहीं पूजा प्रारंभ कर दी। तत्पश्चात पंडित सूरा जी द्वारा विधिपूर्वक मूर्ति की स्थापना करवाई गई। इस प्रकार यह मंदिर बीकानेर नगर की स्थापना (1488 ई.) से भी पूर्व अस्तित्व में आ चुका था, जो इसके प्राचीनता को प्रमाणित करता है।

कोडमदेसर नाम की उत्पत्ति भी एक लोकधारणा से जुड़ी हुई है। माना जाता है कि इस स्थान का नाम माता कोडम दे के नाम पर पड़ा, जिन्होंने मंदिर के पीछे एक विशाल तालाब का निर्माण करवाया था। इस तालाब के कारण यह क्षेत्र जल-संरक्षण और पशुपालन के लिए अत्यंत उपयोगी बना। बाद में इसी नाम पर इस गांव को कोडमदेसर के रूप में जाना जाने लगा। इस मंदिर की सबसे अनोखी और विलक्षण विशेषता यह है कि यह पूरी तरह खुले आसमान के नीचे स्थित है और इसकी कोई छत नहीं है। मान्यता है कि महाराजा गंगा सिंह जी के शासनकाल में मंदिर पर छत बनवाने का प्रयास किया गया, किंतु वह बार-बार गिर जाती थी। इसके पश्चात यह विश्वास दृढ़ हो गया कि भैरवनाथ

स्वयं खुले आकाश के नीचे निवास करना चाहते हैं। तभी से आज तक यह मंदिर बिना छत के ही विद्यमान है, जो इसे राजस्थान के अन्य मंदिरों से बिल्कुल अलग पहचान प्रदान करता है। मंदिर परिसर में स्वानों (कुत्तों) की उपस्थिति भी एक महत्वपूर्ण धार्मिक प्रतीक मानी जाती है। भैरव को श्वान का अधिपति माना जाता है, इसलिए यहाँ स्वान स्वतंत्र रूप से विचरण करते हैं और उन्हें भैरवजी का प्रिय वाहन माना जाता है। यह परंपरा भैरव-पूजन की शास्त्रीय परंपरा और लोकविश्वास—दोनों का अद्भुत संगम प्रस्तुत करती है।

कालांतर में कोडमदेसर भैरव मंदिर का कई बार विस्तार एवं जीर्णोद्धार किया गया। राव बीकाजी के पश्चात बीकानेर के अनेक शासकों, विशेषकर महाराजा गंगा सिंह, ने मंदिर के विकास हेतु निर्माण कार्य करवाए, जिनमें एक छोटा महल, धर्मशालाएँ और यात्रियों के ठहरने की सुविधाएँ सम्मिलित हैं। धार्मिक दृष्टि से भैरूजी को कलियुग के जाग्रत देव के रूप में माना जाता है। मान्यता है कि वे अपने भक्तों के संकट शीघ्र दूर करते हैं। इसी कारण यहाँ नवविवाहित दंपत्ति, संतान-प्राप्ति की कामना करने वाले दंपत्ति तथा नवजात शिशुओं के मुंडन संस्कार के लिए विशेष रूप से आते हैं। प्रत्येक वर्ष भाद्रपद मास (भादवे) में यहाँ विशाल मेला आयोजित होता है, जिसमें बीकानेर, चूरू, नागौर, जोधपुर और सीमावर्ती ग्रामीण क्षेत्रों से हजारों श्रद्धालु आते हैं। यह मेला केवल धार्मिक आयोजन ही नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था, लोकसंस्कृति, हस्तशिल्प, पशु-व्यापार और सामाजिक समागम का भी एक प्रमुख केंद्र बन जाता है। इस प्रकार कोडमदेसर भैरव मंदिर न केवल बीकानेर रियासत के राजनीतिक इतिहास से जुड़ा हुआ है, बल्कि

यह लोकदेवता परंपरा, ग्रामीण आस्था, सामाजिक संरचना और लोक-धार्मिक पर्यटन—इन सभी का एक सशक्त ऐतिहासिक केंद्र भी है।

1.5 मेला कब व कितनी बार भरता है एवं मेले की प्रमुख विशेषता

बीकानेर क्षेत्र की लोकआस्था और धार्मिक परम्पराओं में कोडमदेसर भैरव मेला एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। यह मेला हर वर्ष 4–5 सितंबर को कोडमदेसर गाँव में आयोजित किया जाता है, जो बीकानेर शहर से लगभग 15 मील (लगभग 24 किलोमीटर) पश्चिम दिशा में स्थित है। यह स्थान बीकानेर जिले की कोलायत तहसील के अंतर्गत आता है और क्षेत्रीय श्रद्धालुओं के लिए आस्था का प्रमुख केंद्र माना जाता है। ऐतिहासिक परम्परा के अनुसार इस स्थल की प्रतिष्ठा बीकानेर राज्य के संस्थापक राव बीका से जुड़ी हुई है। कहा जाता है कि उन्होंने सन् 1465 ईस्वी में यहाँ भेरू जी (भैरव बाबा) की प्रतिमा स्थापित करवाई थी। इसी कारण यह स्थल बीकानेर के इतिहास, लोकविश्वास और धार्मिक परम्पराओं का महत्वपूर्ण प्रतीक बन गया। समय के साथ यहाँ प्रतिवर्ष लगने वाला भैरव मेला स्थानीय समाज के लिए एक प्रमुख धार्मिक आयोजन के रूप में विकसित हो गया।

मेले के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहाँ पहुँचकर बाबा भैरवनाथ की पूजा-अर्चना करते हैं। विशेष रूप से यहाँ

लापसी का भोग लगाने की परम्परा अत्यंत प्रसिद्ध है। लोकमान्यता के अनुसार भक्त अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए भैरव बाबा से प्रार्थना करते हैं और इच्छा पूर्ण होने पर पुनः यहाँ आकर लापसी का प्रसाद अर्पित करते हैं। यह परम्परा इस मेले को केवल धार्मिक आयोजन ही नहीं, बल्कि लोकसंस्कृति और सामुदायिक आस्था का भी महत्वपूर्ण प्रतीक बनाती है। धार्मिक महत्व के साथ-साथ यह मेला सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। मेले के अवसर पर आसपास के गाँवों और दूर-दराज़ के क्षेत्रों से लोग यहाँ एकत्रित होते हैं, जिससे यह

आयोजन क्षेत्रीय सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक एकता का माध्यम भी बन जाता है। इस प्रकार कोडमदेसर भैरव मेला बीकानेर क्षेत्र की लोकधार्मिक परम्पराओं, ऐतिहासिक विरासत और सामुदायिक जीवन का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करता है।

राजस्थान के बीकानेर क्षेत्र में स्थित कोडमदेसर का भैरवनाथ मंदिर धार्मिक आस्था, लोकपरम्परा और ऐतिहासिक स्मृतियों का महत्वपूर्ण केंद्र माना जाता है। स्थानीय परम्पराओं के अनुसार यह मंदिर बीकानेर राज्य की स्थापना से भी पूर्व का माना जाता है। जनश्रुतियों में उल्लेख मिलता है कि भगवान भैरवनाथ की मूर्ति को उनके दो भक्त इस क्षेत्र में लेकर आए थे। मार्ग में भगवान भैरवनाथ ने अपने भक्तों को यह चेतावनी दी थी कि वे यात्रा के दौरान पीछे मुड़कर न देखें, क्योंकि जिस स्थान पर वे पीछे मुड़कर देखेंगे, वहीं वे स्थायी रूप से स्थापित हो जाएंगे। किंतु यात्रा के दौरान भक्तों से भूलवश पीछे मुड़कर देखने की घटना घटित हुई, जिसके परिणामस्वरूप भैरवनाथ उसी स्थान पर स्थायी रूप से प्रतिष्ठित हो गए। यही स्थल आगे चलकर कोडमदेसर भैरव मंदिर के रूप में प्रसिद्ध हुआ (गुप्ता, *बीकानेर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन*)।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार भक्त यहाँ मनोकामना पूर्ण होने पर विभिन्न प्रकार के प्रसाद अर्पित करते हैं। सामान्यतः लापसी, मिठाई तथा अन्य खाद्य प्रसाद चढ़ाए जाते हैं, वहीं लोकपरम्परा के अंतर्गत कुछ श्रद्धालु भैरवनाथ को मदिरा का प्रसाद भी अर्पित करते हैं। यह भी मान्यता है कि चढ़ाया गया प्रसाद उसी स्थान पर ग्रहण करना आवश्यक होता है। कोडमदेसर भैरव मंदिर विशेष रूप से ग्रहदोष निवारण की आस्था से भी जुड़ा हुआ है। लोकविश्वास के अनुसार नवविवाहित दम्पत्ति यहाँ आकर पूजा-अर्चना करते हैं, जिससे वैवाहिक जीवन में आने वाली बाधाओं और ग्रहदोषों का शमन होता है। इसी कारण यह मंदिर नवविवाहित जोड़ों के बीच विशेष रूप से प्रसिद्ध माना जाता है।

इस मंदिर की एक अन्य विशेषता इसकी समावेशी पूजा परम्परा है। यहाँ पर किसी विशेष पुजारी वर्ग तक पूजा की प्रक्रिया सीमित नहीं है; बल्कि श्रद्धालु स्वयं भी प्रसाद चढ़ाकर पूजा-अर्चना कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ कुत्तों (श्वान) की पूजा की परम्परा भी प्रचलित है, क्योंकि धार्मिक मान्यता के अनुसार श्वान भगवान भैरवनाथ के प्रिय और उनके वाहन माने जाते हैं। इस प्रकार कोडमदेसर का भैरव मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल ही नहीं, बल्कि क्षेत्रीय लोकविश्वास, सांस्कृतिक परम्परा और सामाजिक आस्था का भी महत्वपूर्ण प्रतीक है (गुप्ता, *बीकानेर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन*)।

1.6 अन्य ग्रामीण देवालयों का अध्ययन

1.6.1 गुसाईसर (बीकानेर)—

गुसाईसर गाँव बीकानेर से 33 किलोमीटर दूर बीकानेर जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित है। यहाँ बाबा गुसाईजी महाराज का मंदिर स्थित है। इस मंदिर का जीर्णोधार चोपड़ा परिवार द्वारा विक्रम संवत 2078 में करवाया गया। यहां वर्ष में दो बार श्रावन शुक्ल द्वितीया व माघ शुक्ल द्वितीया को मेला भरता है। मंदिर परिसर में बाबा गुसाई जी की आरती शिलापट्ट पर उत्कीर्ण है, जिसके दर्शन करने एवं साफ़ दिल से लोकगीत गाने पर मनोकामनाएं पूरी होती हैं। दूर-दूर से श्रद्धालु अपनी मनोकामना व पारिवारिक खुशहाली के लिए यहां दर्शन करने आते हैं, कृषक वर्ग गुसाईसर से अच्छी फसल व पशुधन की प्राप्ति के लिए नागौर के जुजाला तक पैदल यात्रा करते हैं अश्विन मास की शुक्ल द्वितीया को जुंजाला में मेला भरता है।

1.6.2 तोलियासर भैरूंजी, श्रीडूंगरगढ़ (बीकानेर)

बीकानेर से लगभग 80 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह झील प्राकृतिक सौंदर्य और धार्मिक आस्था का अद्भुत संगम प्रस्तुत करती है, जहाँ का शांत वातावरण और रमणीय दृश्य इसे एक महत्वपूर्ण पर्यटन एवं तीर्थ स्थल बनाते

हैं। 15वीं शताब्दी में बीकानेर के संस्थापक राव बिका ने यहाँ एक भव्य मंदिर का निर्माण करवाया, जो उस समय की उत्कृष्ट स्थापत्य कला और धार्मिक परंपराओं का प्रतीक है। यह मंदिर लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है, जो राजस्थान की पारंपरिक वास्तुकला की विशेष पहचान है। मंदिर के गर्भगृह में काले पत्थर से बनी भगवान भैरव की प्रतिमा श्वान पर स्थापित है, जो उनके स्वरूप और वाहन का प्रतीकात्मक चित्रण करती है। इसके अतिरिक्त, मंदिर की दीवारों पर पौराणिक कथाओं पर आधारित सुंदर भित्ति चित्र अंकित हैं, जो न केवल धार्मिक महत्व को दर्शाते हैं, बल्कि उस युग की समृद्ध कला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को भी सजीव रूप में प्रस्तुत करते हैं।

1.6.3 बजरंग धोरा, पूगल रोड (बीकानेर)

बीकानेर से लगभग 8 किलोमीटर दूर पूगल रोड पर स्थित यह मंदिर हनुमान भक्तों के लिए विशेष आस्था का केंद्र है। यहाँ स्थापित दक्षिण-पूर्व मुखी हनुमान जी की लाल पत्थर की प्रतिमा अत्यंत आकर्षक और दिव्य है, जिसमें वे संजीवनी पर्वत को धारण किए हुए दिखाई देते हैं, जो उनके पराक्रम और रामभक्ति का प्रतीक है। इस पावन स्थल की आध्यात्मिक परंपरा का आरंभ हनुमान भक्त बाबा रामचन्द्र जी दाधीच द्वारा किया गया, जिन्होंने यहाँ हनुमान जी की साधना प्रारम्भ की। समय के साथ उनकी तपस्या और श्रद्धा के प्रभाव से यह स्थान विकसित होता गया और विक्रम संवत 2016 में "बजरंग धोरा" की स्थापना हुई। तब से यह स्थल एक प्रमुख तीर्थ के रूप में प्रसिद्ध हो गया, जहाँ दूर-दूर से श्रद्धालु दर्शन और पूजा-अर्चना के लिए आते हैं तथा अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति की प्रार्थना करते हैं।

1.6.4 सुजानदेसर में मां काली व बाबा रामदेव के मंदिर-

मां काली मंदिर- यहाँ माता के नौ स्वरूपों की सामूहिक आरती गाई जाती है आरती के समय संपूर्ण वातावरण मंत्रोच्चार, घंटियों की मधुर ध्वनि तथा भक्तों के जयकारों से गुंजायमान हो उठता है, जिससे एक अद्भुत आध्यात्मिक ऊर्जा का अनुभव होता है। इसके अतिरिक्त यहाँ मां काली की पंचधातु से निर्मित ग्यारह फीट तीन इंच ऊँची अत्यंत भव्य एवं आकर्षक प्रतिमा विराजमान है, जो अपनी दिव्यता, कलात्मक शिल्पकला और अलौकिक आभा के कारण श्रद्धालुओं के आकर्षण का प्रमुख केंद्र बनी हुई है। प्रतिमा के दर्शन मात्र से भक्तों के मन में श्रद्धा, शक्ति और आत्मविश्वास का संचार होता है। मंदिर का शांत एवं भक्तिमय वातावरण श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक शांति और देवी शक्ति के प्रति गहन आस्था से अभिभूत कर देता है।

बाबा रामदेव- बीकानेर से एक कोस दूर श्री हेरानंद माली द्वारा सन् सत्रह सौ तिहत्तर में इस मंदिर की स्थापना की गई भद्रपद की शुक्ल द्वितीया से शुक्ल दशमी तक यहाँ मेला भरता है यहाँ पैंतीस फीट गहरी बावड़ी भी है जो कभी नहीं सूखती

1.6.5 नखतबन्ना चारणवाला कोलायत

यह बीकानेर से एक सौ पैंतालीस किलोमीटर दूर है सन 1853 में मरूधर में प्रचंड तूफान आया तब भगवान शिव के अवतार योगी निरंजननाथ उस क्षेत्र से गुजर रहे थे वहाँ एक गाय को संघर्ष में फंसा हुआ देखकर उसे भयमुक्त करने के लिए अलौकिक स्वरूप प्रदान किया इस घटना से प्रभावित होकर ठाकुर गोविंद सिंह जी भी योगी के दर्शन करने गए योगी ने उन्हें तीन पुत्र होने का वरदान दिया सबसे बड़े भवुता सिंह थे जिनका धाम कालीनाड़ी में है वहाँ भाद्रपद की षष्टि को बड़ा मेला भरता है इसी वंश परंपरा में आगे नखतबन्ना हुए जिनका मंदिर चारणवाला कोलायत में है जिनका मेला भादवों की पंचमी को लगता है सांप बिच्छू काटे हुए पीड़ित लोग यहाँ पीड़ा से मुक्ति के लिए आते हैं

1.6.6 पुनरासर धाम बीकानेर -

यह मंदिर बीकानेर से चौंसठ किलोमीटर दूर है यहाँ विक्रम संवत सत्रह सौ पचहत्तर की ज्येष्ठ पूर्णिमा को मंदिर की नींव रखी गई एक वर्ष पूर्व जब जयरामदास बोथरा जी पंजाब से बालाजी की मूर्ति ला रहे थे तब उनकी ऊँटनी का पैर टूट गया था पर बालाजी की कृपा से ऊँटनी स्वस्थ हो गई वह उनकी पूजा प्रारंभ हुई और मंदिर का निर्माण हुआ यहाँ हनुमान जी को चूरमे का भोग लगाया जाता है

1.6.7 नेहड़ी जी मंदिर (करणी माता का प्राचीन स्वरूप), देशनोक: लोकशक्ति की ऐतिहासिक निरंतरता

देशनोक स्थित नेहड़ी जी मंदिर को करणी माता के प्राचीन स्वरूप के रूप में माना जाता है और यह स्थल राजस्थान की लोकदेवी परंपरा की ऐतिहासिक निरंतरता का जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करता है। करणी माता को चारण समाज की कुलदेवी, शक्तिसम्पन्न योगिनी और लोकदेवी के रूप में पूजा जाता है, जिनकी ख्याति राजस्थान के बाहर तक फैली हुई है (राठौड़, 2016)। नेहड़ी जी के रूप में उनका यह स्वरूप उनके प्रारंभिक तप, साधना और लोक-कल्याणकारी भूमिका से जुड़ा हुआ माना जाता है। ऐतिहासिक दृष्टि से नेहड़ी जी मंदिर देशनोक क्षेत्र की धार्मिक चेतना का मूल आधार रहा है। लोकमान्यताओं के अनुसार यहाँ से करणी माता की शक्ति का विस्तार हुआ, जिसने बाद में देशनोक स्थित करणी माता मंदिर की स्थापना, राजाओं के संरक्षण और जनसामान्य के विश्वास को स्थायित्व प्रदान किया (भूलन, 2019)। यह मंदिर केवल आस्था का केंद्र नहीं, बल्कि बीकानेर की धार्मिक-सांस्कृतिक पहचान का भी आधार है। आज देशनोक धार्मिक पर्यटन का एक प्रमुख केंद्र बन चुका है, जहाँ करणी माता मंदिर के साथ-साथ नेहड़ी जी मंदिर की भी विशिष्ट भूमिका है।

प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु यहाँ दर्शन हेतु आते हैं, जिससे यह क्षेत्र लोकदेवी परंपरा पर आधारित धार्मिक पर्यटन के सुदृढ़ आधार के रूप में विकसित हो चुका है (गुप्ता, 2021)। इस प्रकार नेहड़ी जी मंदिर लोकशक्ति, इतिहास और पर्यटन—तीनों को एक साथ जोड़ता है।

1.7 बीकानेर अंचल में लोक-धार्मिक पर्यटन का वर्तमान स्वरूप

बीकानेर अंचल वर्तमान समय में राजस्थान के उन विशिष्ट क्षेत्रों में शामिल हो चुका है जहाँ लोकदेवता, ग्राम्य देवालय और संत-सम्प्रदाय धार्मिक पर्यटन के महत्वपूर्ण आधार के रूप में उभर रहे हैं। देशनोक भैरव, करणी माता (देशनोक), पाबूसर हनुमान, जसनाथ जी धाम, बाबा रामदेव, मुकामजी, कालिका माता, कबूत जी, रणछोड़लाल तथा तालड़ाय जी जैसे स्थलों पर प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालुओं की उपस्थिति यह संकेत देती है कि लोक-धार्मिक पर्यटन अब केवल आस्था तक सीमित न रहकर एक संगठित सामाजिक-आर्थिक गतिविधि का रूप ले चुका है (शर्मा, 2021)। स्थानीय एवं बाहरी श्रद्धालुओं की भागीदारी के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि इन मंदिरों और धामों पर आने वाले अधिकांश श्रद्धालु बीकानेर, चूरू, नागौर, जोधपुर और जैसलमेर जैसे समीपवर्ती जिलों से आते हैं, जिन्हें स्थानीय श्रद्धालु की श्रेणी में रखा जा सकता है। इसके साथ ही देशनोक, पाबूसर और जसनाथ जी धाम जैसे प्रमुख केंद्रों पर हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, गुजरात और मध्य प्रदेश से भी बड़ी संख्या में बाहरी श्रद्धालु आते हैं, जिससे यह क्षेत्र अंतर-राज्यीय लोक-धार्मिक पर्यटन के मानचित्र पर अपनी पहचान बना रहा है (गुप्ता, 2020)। स्थानीय श्रद्धालु प्रायः साप्ताहिक दर्शन, मनौतियों, पारिवारिक यात्राओं और घरेलू अनुष्ठानों से जुड़े होते हैं, जबकि बाहरी श्रद्धालुओं की संख्या विशेष मेलों, नवरात्रि, माघपूर्णिमा मेला, रामदेव जयंती और जसनाथी के अवसर पर अत्यधिक बढ़ जाती है। मेलों और यात्राओं का आर्थिक प्रभाव ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। इन अवसरों पर अस्थायी दुकानों, खान-पान केंद्रों, परिवहन, पशु-व्यापार, होटल, धर्मशालाओं और स्थानीय शिल्प वस्तुओं की बिक्री में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। अध्ययन बताते हैं कि बड़े धार्मिक मेलों के दौरान स्थानीय व्यापार में 30 से 50 प्रतिशत

तक की अस्थायी वृद्धि दर्ज की जाती है, जिससे निम्न और मध्यम वर्गीय परिवारों की आय में सीधा इजाफा होता है (सिंह, 2019)। इसके अतिरिक्त ऑटो-रिक्शा, जीप, बस और निजी वाहन सेवाओं से जुड़े लोगों को भी प्रत्यक्ष रोजगार प्राप्त होता है। कई स्थानों पर महिलाएँ प्रसाद, खिलौने, लोक-आभूषण और हस्तशिल्प बेचकर घरेलू आय में योगदान करती हैं, जिससे लोक-धार्मिक पर्यटन का लिंग-सशक्तिकरण से भी अप्रत्यक्ष संबंध स्थापित होता है (मिश्र, 2021)। अवसंरचना की स्थिति का मूल्यांकन करने पर यह तथ्य सामने आता है कि प्रमुख स्थलों जैसे देशनोक, पाबूसर और मुकामधाम पर सड़क, बिजली, पेयजल, पुलिस व्यवस्था और प्राथमिक चिकित्सा की सुविधाएँ अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में हैं, जबकि नवलदासना, कबूत जी, तालड़ाय जी और ग्रामीण क्षेत्रों के कई मंदिरों पर अब भी आधारभूत सुविधाओं का अभाव दिखाई देता है (राठौड़, 2020)। कई स्थलों तक पहुँचने के लिए पक्की सड़क नहीं हैं, सार्वजनिक शौचालयों की व्यवस्था अपर्याप्त है और सूचना-पट्ट, विश्राम स्थल तथा डिजिटल मार्गदर्शन सुविधाएँ लगभग अनुपस्थित हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि यद्यपि बीकानेर अंचल में लोक-धार्मिक पर्यटन की अपार संभावनाएँ विद्यमान हैं, किंतु अवसंरचनात्मक असमानता इसके संतुलित विकास में एक बड़ी बाधा बनी हुई है। इस प्रकार बीकानेर अंचल में लोक-धार्मिक पर्यटन का वर्तमान स्वरूप स्थानीय आस्था, अंतर-राज्यीय श्रद्धालुओं की सहभागिता, ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर इसके सकारात्मक प्रभाव तथा अवसंरचनात्मक सीमाओं के द्वंद्व में विकसित होता हुआ दिखाई देता है, जो आगे आने वाले अध्यायों में नीति-निर्माण, सतत विकास और सांस्कृतिक संरक्षण के लिए व्यापक विमर्श की माँग करता है।

बीकानेर अंचल में विकसित हो रहा लोक-धार्मिक पर्यटन केवल धार्मिक आस्था तक सीमित न रहकर ग्रामीण समाज की आर्थिक संरचना, सामाजिक सहभागिता और सांस्कृतिक निरंतरता को नई दिशा प्रदान कर रहा है। कोडमदेसर भैरव, करणी माता, पूनरासर हनुमान, जसनाथ जी धाम, बाबा रामदेव, भद्रकाली, कालिका माता, नवलेवन्ना, कबूत जी और लालणाथ जी जैसे लोकदेवता केंद्रों पर बढ़ती श्रद्धालु संख्या यह संकेत देती है कि यह क्षेत्र भविष्य में एक सशक्त लोक-धार्मिक पर्यटन गलियारे के रूप में विकसित हो सकता है (शर्मा, 2021)। इससे ग्रामीण रोजगार, महिला सहभागिता और लोककला-हस्तशिल्प के संरक्षण की व्यापक संभावनाएँ उत्पन्न हो रही हैं। ग्रामीण रोजगार के संदर्भ में लोक-धार्मिक पर्यटन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। धार्मिक मेलों, पदयात्राओं और वार्षिक उत्सवों के दौरान अस्थायी दुकानों, भोजनालयों, प्रसाद विक्रय, परिवहन सेवाओं, धर्मशालाओं, पार्किंग व्यवस्थाओं तथा सफाई सेवाओं में बड़ी संख्या में ग्रामीण युवाओं को प्रत्यक्ष रोजगार प्राप्त होता है (सिंह, 2019)। अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि बड़े मेलों के समय स्थानीय ग्रामीण परिवारों की आय में 25 से 40 प्रतिशत तक की अस्थायी वृद्धि होती है, जो कृषि पर निर्भर अर्थव्यवस्था के लिए एक सहायक आय स्रोत बन जाती है (गुप्ता, 2020)। इसके अतिरिक्त गाइड, पुजारी-सहायक, भजन मंडली, कीर्तन दल और सुरक्षा से जुड़े लोगों को भी रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। इस प्रकार लोक-धार्मिक पर्यटन ग्रामीण बेरोजगारी को आंशिक रूप से कम करने में एक प्रभावी सामाजिक-आर्थिक साधन के रूप में उभर रहा है।

महिला सहभागिता की दृष्टि से भी लोक-धार्मिक पर्यटन बीकानेर अंचल में एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में सामने आ रहा है। मंदिरों और मेलों के आसपास प्रसाद निर्माण, फूल-मालाएँ, अगरबत्ती, दीपक, धार्मिक वस्तुएँ, लोक-आभूषण, वस्त्र और खाद्य सामग्री के विक्रय में बड़ी संख्या में ग्रामीण महिलाएँ सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं (मिश्र, 2021)। इसके अतिरिक्त भजन-कीर्तन मंडलियों, लोकनृत्य समूहों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में भी महिलाओं की भागीदारी निरंतर बढ़ रही है। यह सहभागिता केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे महिलाओं का सामाजिक आत्मविश्वास, सार्वजनिक भागीदारी और निर्णय-क्षमता भी सुदृढ़ हो रही है (कुमार, 2020)। इस प्रकार लोक-धार्मिक पर्यटन ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरण का एक अप्रत्यक्ष लेकिन प्रभावी माध्यम बन रहा है।

लोककला, शिल्प और हस्तशिल्प के संरक्षण एवं विस्तार की दृष्टि से भी लोक-धार्मिक पर्यटन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। धार्मिक मेलों और उत्सवों के अवसर पर लोकगायन, पड़-गायन, भजन, कीर्तन, अग्निनृत्य, जसनाथी नृत्य, रामदेव भजन, चारण गायन और देवी-गीतों की परंपराएँ सक्रिय रूप से जीवित रहती हैं (शुक्ल, 2018)। इसके साथ ही मिट्टी के दीपक, मूर्तियाँ, ऊँट-चर्म शिल्प, लकड़ी की वस्तुएँ, कशीदाकारी, मिरर-वर्क, राजस्थानी आभूषण और लोककलाओं की बिक्री में भी उल्लेखनीय वृद्धि होती है। यह प्रक्रिया न केवल पारंपरिक शिल्पकारों को आजीविका प्रदान करती है, बल्कि लोकसंस्कृति की निरंतरता को भी सुरक्षित करती है (राठौड़, 2019)।

सांस्कृतिक दृष्टि से लोक-धार्मिक पर्यटन सामूहिक स्मृति, लोककथाओं, जातीय पहचान और आस्थाओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानांतरित करने का कार्य कर रहा है। भैरव, करणी माता, रामदेव, जसनाथ, लालणाथ और अन्य लोकदेवताओं से जुड़ी कथाएँ, अनुष्ठान और उत्सव ग्रामीण समाज के सांस्कृतिक मानस को निरंतर पोषित करते हैं (दत्त, 2017)। जब बाहरी श्रद्धालु इन स्थलों पर आते हैं, तो स्थानीय लोकसंस्कृति को व्यापक पहचान मिलती है, जिससे सांस्कृतिक आत्मगौरव और क्षेत्रीय पहचान सुदृढ़ होती है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बीकानेर अंचल में लोक-धार्मिक पर्यटन की आर्थिक संभावनाएँ ग्रामीण रोजगार के विस्तार में, सामाजिक संभावनाएँ महिला सहभागिता और सामुदायिक एकता में तथा सांस्कृतिक संभावनाएँ लोककला, शिल्प और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में निहित हैं। यदि इन संभावनाओं को सुनियोजित नीति, प्रशिक्षण और आधारभूत संरचना के माध्यम से विकसित किया जाए, तो यह क्षेत्र सतत पर्यटन विकास का एक आदर्श मॉडल बन सकता है।

1.8 निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध बीकानेर अंचल के कोडमदेसर भैरव मंदिर को केंद्र में रखते हुए तोलियासर भेरू जी, बजरंग धोरा हनुमान, गुसाईं जी धाम, सुजानदेसर की माँ काली एवं बाबा रामदेव, नखतबन्नाजी जैसे प्रमुख लोकधार्मिक स्थलों के बहुआयामी अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट करता है कि बीकानेर अंचल की धार्मिक संस्कृति केवल शास्त्रीय परंपरा तक सीमित न होकर गहन लोक-आस्था, जातीय स्मृति, पर्यावरणीय चेतना, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक निरंतरता से गहराई से जुड़ी हुई है। शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि ये सभी स्थल केवल पूजा-अर्चना के केंद्र नहीं, बल्कि ग्रामीण जीवन की सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक चेतना और सामूहिक स्मृति के जीवंत आधार हैं (शर्मा, 2021; सिंह, 2019)। शोध निष्कर्ष के रूप में यह भी स्पष्ट हुआ है कि बीकानेर अंचल में लोक-धार्मिक पर्यटन वर्तमान समय में एक उभरती हुई सामाजिक-आर्थिक शक्ति के रूप में विकसित हो रहा है। मेलों, यात्राओं और पर्वों के माध्यम से ग्रामीण रोजगार, अस्थायी व्यापार, महिला आत्मनिर्भरता, परिवहन सेवाएँ तथा लोककला और हस्तशिल्प को नया जीवन मिल रहा है (गुप्ता, 2020; मिश्र, 2021)। इसके साथ ही यह भी सामने आया है कि देशनोक, पूनरासर और जसनाथ जी धाम जैसे कुछ गिने-चुने स्थलों को छोड़कर अधिकांश ग्रामीण देवालय आज भी अवसंरचनात्मक सुविधाओं, प्रचार-प्रसार और प्रशासनिक सहयोग के अभाव से जूझ रहे हैं (राठौड़, 2020)। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि लोक-धार्मिक पर्यटन की संभावनाएँ व्यापक हैं, किंतु उसका विकास असमान और असंतुलित है।

सांस्कृतिक संरक्षण मॉडल के संदर्भ में यह शोध यह प्रतिपादित करता है कि बीकानेर अंचल के लोकदेवता स्थल सतत पर्यटन (Sustainable Tourism) के ऐसे आदर्श मॉडल के रूप में विकसित किए जा सकते हैं, जहाँ धार्मिक आस्था, पर्यावरण संरक्षण और स्थानीय समुदाय की सहभागिता—तीनों का संतुलन बना रहे (यूएनडब्ल्यूटीओ, 2018; शर्मा, 2020)। लोककथाओं, भजनों, अनुष्ठानों, अग्निनृत्य, जसनाथी परंपरा, रामदेव गायन, देवी-गीत, झाड़-फूंक और लोकचिकित्सा जैसी परंपराओं का संरक्षण केवल सांस्कृतिक धरोहर के रूप में नहीं, बल्कि जीवित परंपराओं के रूप में किया जाना आवश्यक है। इसके लिए स्थानीय युवाओं को लोकगाइड, सांस्कृतिक स्वयंसेवक और डिजिटल कंटेंट

क्रिएटर के रूप में प्रशिक्षित किया जा सकता है, जिससे सांस्कृतिक ज्ञान की पीढ़ीगत निरंतरता भी बनी रहे (कुमार, 2020)।

नीति-निर्माताओं के लिए सुझाव के रूप में यह अध्ययन स्पष्ट रूप से अनुशंसा करता है कि केंद्र एवं राज्य सरकारों की धार्मिक पर्यटन योजनाओं—जैसे PRASAD योजना, स्वदेश दर्शन योजना तथा राजस्थान धार्मिक पर्यटन नीति—में लोकदेवता आधारित ग्रामीण स्थलों को भी प्राथमिकता दी जाए (पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार, 2021)। सड़क, पेयजल, स्वच्छता, प्राथमिक चिकित्सा, डिजिटल सूचना प्रणाली, पार्किंग और रात्रि-विश्राम सुविधाओं का चरणबद्ध विकास किया जाना आवश्यक है। इसके साथ ही लोक-धार्मिक पर्यटन के लिए पृथक "बीकानेर लोक-धार्मिक पर्यटन सर्किट" विकसित किया जाए, जिसमें देशनोक–कोडमदेसर–पूनरासर–कतरियासर–कोलायत–कालू जैसे स्थलों को जोड़ा जाए (गुप्ता, 2022)। इसके अतिरिक्त PPP मॉडल के माध्यम से निजी निवेश, CSR फंड, धार्मिक ट्रस्ट और स्वयंसेवी संगठनों की सहभागिता से आधारभूत संरचना का विकास किया जा सकता है, किंतु इस प्रक्रिया में यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि मंदिरों का अत्यधिक व्यावसायीकरण न हो और स्थानीय समुदाय का नियंत्रण बना रहे (राठौड़, 2019)। प्लास्टिक मुक्त तीर्थ, वर्षा जल संचयन, सौर ऊर्जा, कचरा पृथक्करण और हरित परिधि विकास जैसे उपायों को अनिवार्य रूप से लागू किया जाना चाहिए, जिससे पर्यावरण संरक्षण और पर्यटन विकास के बीच संतुलन स्थापित हो सके (मिश्र, 2020)।

संदर्भ सूची

1. शर्मा, रमेश. (2021). *राजस्थान की लोकदेवता परंपरा: आस्था, संस्कृति और समाज.* जयपुर: राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
2. सिंह, प्रताप. (2019). *लोकधर्म और ग्रामीण समाज: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन.* नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
3. गुप्ता, मधु. (2020). *धार्मिक पर्यटन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था.* नई दिल्ली: भारतीय पर्यटन अध्ययन संस्थान।
4. गुप्ता, मोहनलाल. बीकानेर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन. जोधपुर: राजस्थानी ग्रंथागार, 2009।
5. मिश्र, अरविंद. (2021). *लोकसंस्कृति और क्षेत्रीय पहचान.* वाराणसी: भारतीय लोककला प्रकाशन।
6. राठौड़, भंवर सिंह. (2020). *पश्चिमी राजस्थान का धार्मिक भूगोल.* बीकानेर: मरुस्थलीय अध्ययन केन्द्र।
7. शर्मा, सुनीता. (2020). *सतत पर्यटन और सांस्कृतिक संरक्षण.* जयपुर: रावत पब्लिकेशन।
8. कुमार, सुरेंद्र. (2020). *लोकपरंपराएँ और डिजिटल युग.* नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
9. गुप्ता, विनोद. (2022). *राजस्थान में धार्मिक पर्यटन के उभरते सर्किट.* उदयपुर: मेवाड़ विश्वविद्यालय प्रकाशन।
10. ओझा, गौरीशंकर हीराचंद। *बीकानेर राज्य का इतिहास*। राजस्थानी ग्रंथागार।
11. राठौड़, नरेंद्र. (2019). *लोकदेवता, आस्था और सामाजिक संरचना.* जोधपुर: मरुधरा प्रकाशन।
12. मिश्र, रामकिशोर. (2020). *पर्यावरण संरक्षण और ग्रामीण धार्मिक स्थल.* भोपाल: मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ प्रतिष्ठान।
13. भारत सरकार, पर्यटन मंत्रालय. (2021). *स्वदेश दर्शन योजना एवं प्रसाद योजना: दिशा-निर्देश.* नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन विभाग।
14. संयुक्त राष्ट्र विश्व पर्यटन संगठन (UNWTO). (2018). *सतत पर्यटन विकास के वैश्विक सिद्धांत* (हिंदी अनुवाद). नई दिल्ली: पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार।